प्रो. अनुराधा तिवारी

एम.ए., पीएच.डी.

प्राचार्य

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.)

दूरभाष : 0522-4953069
Email: nscbggdc@gmail.com
Website : nscbonline.in

संदेश

I can not teach only today anything
I can only make them to think
-Socrates

शिक्षा, अपने आप में एक व्यापक परम्परा, कर्तव्य बोध, मार्ग-दर्शन, करणीय-अकरणीय का ज्ञान, मन-बुद्धि-शरीर का तादात्म्य आदि अनेकों पक्षों को समेटते हुए विद्यार्थियों को उद्‌बोधन प्रदान करने का सशक्त माध्यम है। प्रत्येक नागरिक का बहुआयामी विकास, मानव संसाधन विकास पर निर्भर है। शिक्षा ही मानव संसाधन को विकसित, सशक्त, बहुपयोगी, मूल्यवान बनाती है किसी भी 'डिग्री' से शोभायमान होना सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए उपयोगी हो सकता हो किन्तु वह आपको उत्कृष्ट व्यक्तित्व का स्वामी बनाती है यह स्थिति संशय ग्रसित हो सकती है। अगर आप चिंतन करते हैं तो आप जिज्ञासु होने के साथ-साथ बहुमूल्य मानवीय मूल्यों के प्रति आग्रही होते हैं, उसमें वीक्षण करके ग्राह्य मूल्यों को स्वयं में, परिवार में तथा समाज स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं, आपके व्यक्तित्व का विकास होता है। आपके चिंतन को धार मिलती है। आपके अन्दर उस तृष्णा का स्फुरण होता है जो किसी भी श्रेष्ठ मानव के लिये अत्यन्त आवश्यक है आप राष्ट्रीय, सामाजिक, प्रादेशिक, स्थानीय, पारिवारिक और व्यक्तिगत पक्षों को एक बुद्धिमान, जाग्रत, निरपेक्ष तथा निरन्तर उत्थान के प्रति सापेक्ष व्यक्ति की तरह विवेचित कर पाते हैं।

शिक्षा आपको प्रारम्भिक ज्ञान प्रदान करके एक स्फुरण, एक लौ, एक दीप्ति देती है जो जीवन भर आपको प्रकाशित करती है।

यः पठति लिखति पश्यति परिपृच्छति पंडितान् उपाश्रयति।
तस्य दिवाकर किरणैः नलिनी दलं इव विस्तारिता बुद्धिः।।

जो पढ़ता है, लिखता है, देखता है, प्रश्न पूछता है बुद्धिमानों का आश्रय लेता है (विद्वानों का संग साथ रखता है) उसकी बुद्धि उसी प्रकार बढ़ती है जैसे सूर्य किरणों से कमल की पंखुड़ियां।

एक जागरूक विद्यार्थी ही अपने शिक्षक का श्रेष्ठ निर्णायक होता है विद्यार्थियों के व्यक्तित्व